



पत्र-पुष्प



निमित्त टीचर्स बहिनें तथा सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनीं प्रति मधुर याद पत्र
(10-06-13)

प्राणेश्वर मात-पिता बापदादा के अति स्नेही, सदा लक्ष्य प्रमाण लक्षण धारण करने वाले, ब्राह्मण जन्म में दिव्य गुण रूपी सम्पत्ति, ईश्वरीय सुख और शक्ति का बर्थ राइट प्राप्त कर रूहानी नशे में रहने वाली सर्व निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सर्व बाबा के लवली लक्की ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद मधुबन घर से स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - 6 सप्ताह की विदेश यात्रा करते हुए कल मैं अपने प्यारे मधुबन घर में आराम से पहुंच गई। इस दौरान लण्डन, कैनाडा, अमेरिका-पीसविलेज, दुबई आदि में अनेक बाबा के नये पुराने बच्चों से मिलना हुआ, चारों ओर बाबा के सभी बच्चे उमंग-उत्साह में रहते बाबा को प्रत्यक्ष करने की अथक सेवाओं के साथ तीव्र पुरुषार्थ की दौड़ी लगा रहे हैं। यह जून मास तो हमारी मीठी मम्मा का मास है, मम्मा कैसे विद्या की देवी सरस्वती बनी, फिर सर्व लक्षणों को धारण कर श्री लक्ष्मी बन गई। बाबा का कहना और मम्मा का करना, सदा ध्यान रखा कि हुक्मी हुक्म चला रहा है। हर घड़ी अन्तिम घड़ी है.. इसी महामंत्र से नम्बरवन चली गई। मम्मा के जीवन चरित्र याद आते ही उनकी मीठी मुस्कराती सूरत सीरत, गम्भीरता की मूर्त सामने आ जाती है। कल मीठे बाबा ने भी हम सबको अपने लक्ष्य की स्मृति दिलाते हुए लक्ष्य प्रमाण लक्षण धारण करने का इशारा दिया है। बाबा कहते बच्चे अब मेहनत करने के बजाए अपने ब्राह्मण जन्म के बर्थ राइट के स्मृति स्वरूप बनो। जो जानना था वह जान लिया, जो पाना था वो पा लिया। अब कोई भी छोटी मोटी बातों में उलझने वा घबराने का समय नहीं है, अब तो मास्टर रचयिता बन उलझी हुई आत्माओं को निकालने का समय है। तो बोलो, हमारे मीठे-मीठे भाई बहिनें ऐसी ही सेवा करते सदा वाह मेरा भाग्य! वाह भाग्य विधाता! इसी खुशियों भरे सूक्ष्म मन के आवाज को सुनते, सदा उमंग-उत्साह की रास करते रहते हो ना!

इस बार तो पाण्डव भवन में भी बहुत अच्छी मौन भट्टियां चल रही हैं। साथ-साथ शान्तिवन में अभी योगशिविर की सेवायें पूरी हुई। अब नम्बरवार हर गुप की भट्टियां, सम्मान समारोह आदि के कार्यक्रम चलते रहेंगे। ज्ञान सरोवर में तो विंग्स के प्रोग्राम चल रहे हैं। बरसात के दिनों में आप सभी भी अपने-अपने स्थानों पर बहुत अच्छी तपस्या करते ही हो। बाबा कहते बच्चे अब दातापन के संस्कार इमर्ज करो। हर एक को स्नेह और सम्मान देकर अपने से भी आगे रखो। इसमें थोड़ी भी बॉडी-कॉन्सेस की नेचर खतरा है इसलिए छोड़ो तो छूटेंगे। कोई बात पकड़कर रखेंगे तो उसी में फंसे रहेंगे। मन में जरा भी अगर कोई किचड़ा हो, किसी स्वभाव संस्कार की अधीनता हो तो उसे निकाल स्थूल सूक्ष्म, अन्दर बाहर से साफ स्वच्छ बनना है। एक दो के साथ व्यवहार वा सम्बन्ध में आते एक दो को पहचान कर चलना है। आपस में मिलकर रहने वा सबको मिलाकर चलने में भी विजडम (अच्छी बुद्धि), धीरज और रूहानियत चाहिए।

हमारा मीठा बाबा हम सबके सामने ऐसा पॉवरफुल आइना है, जिसमें देखने से ही हम बदल जाते हैं। इसमें मुख्य बात है जो पिछला स्वभाव बनाया हुआ है, उसको चेंज करने की अन्दर लगन हो तभी परिवर्तन हो सकता है। तो भट्टी माना ही परिवर्तन। अब ऐसा परिवर्तन करो जो अब कोई भी कर्मबन्धन नहीं, कोई हिसाब-किताब नहीं, कोई चिन्तन नहीं, ऐसा निश्चित रहने का, निश्चित भावी पर अडोल रहने का, बाबा से हर एक वरदान ले लेवे। हर एक का स्वभाव सरल हो, सहजयोगी हो, न कभी अधीन बनें, न किसी को अधीन बनाकर रखे।

ऐसा मिसाल हर एक को बनना ही है। अच्छा - सभी को बहुत-बहुत याद....

ईश्वरीय सेवा में,
बी.के. जानकी



ये अव्यक्त इशारे



विदेही स्थिति का अनुभव करो

- 1) जैसे बाप को सर्व स्वरूपों से वा सर्व सम्बन्धों से जानना आवश्यक है, ऐसे ही बाप द्वारा स्वयं को भी जानना आवश्यक है। जानना अर्थात् मानना। मैं जो हूँ, जैसा हूँ, ऐसे मानकर चलेंगे तो देह में विदेही, व्यक्त में होते अव्यक्त, चलते-फिरते फरिश्ता वा कर्म करते हुए कर्मातीत स्थिति बन जायेगी।
- 2) जैसे विदेही बापदादा को देह का आधार लेना पड़ता है, बच्चों को विदेही बनाने के लिए। ऐसे आप सभी जीवन में रहते, देह में रहते, विदेही आत्मा-स्थिति में स्थित हो इस देह द्वारा करावनहार बन करके कर्म कराओ। यह देह करनहार है, आप देही करावनहार हो, इसी स्थिति को “विदेही स्थिति” कहते हैं। इसी को ही फॉलो फादर कहा जाता है। बाप को फॉलो करने की स्थिति है सदा अशरीरी भव, विदेही भव, निराकारी भव।
- 3) विदेही बनने में “हे अर्जुन बनो”। अर्जुन की विशेषता - सदा बिन्दी में स्मृति स्वरूप बन विजयी बना। ऐसे नष्टोमोहा स्मृति स्वरूप बनने वाले अर्जुन। सदा गीता ज्ञान सुनने और मनन करने वाले अर्जुन। ऐसा विदेही, जीते जी सब मरे पड़े हैं, ऐसे बेहद की वैराग्य वृत्ति वाले अर्जुन बनो।
- 4) बाप के समीप और समान बनने के लिए देह में रहते विदेही बनने का अभ्यास करो। जैसे कर्मातीत बनने का एगजैम्पल साकार में ब्रह्मा बाप को देखा, ऐसे फॉलो फादर करो। जब तक यह देह है, कर्मेन्द्रियों के साथ इस कर्मक्षेत्र पर पार्ट बजा रहे हो, तब तक कर्म करते कर्मेन्द्रियों का आधार लो और न्यारे बन जाओ।
- 5) अपने को शरीर के बंधन से न्यारा बनाने के लिए अवतार समझो। अवतार हूँ, इस स्मृति में रह शरीर का आधार ले कर्म करो। कर्म के बंधन में नहीं बंधो। देह में होते भी **विदेही अवस्था का अनुभव करो**। ड्रामा अनुसार अलग-अलग विशेष सेवा के निमित्त बने हो, लेकिन यह प्रालब्ध नहीं है, यह तो आगे बढ़ने की लिफ्ट है, सर्व द्वारा दुआयें लेने की प्रालब्ध है जीवनमुक्त स्थिति, जिसमें कोई बन्धन नहीं है।
- 6) जो भी परिस्थितियां आ रही हैं और आने वाली हैं, उसमें विदेही स्थिति का अभ्यास बहुत चाहिए इसलिए और सभी बातों को छोड़ यह तो नहीं होगा, यह तो नहीं होगा... क्या

होगा... इस क्वेश्चन को छोड़ दो, अभी विदेही स्थिति का अभ्यास बढ़ाओ। विदेही बच्चों को कोई भी परिस्थिति वा कोई भी हलचल प्रभाव नहीं डाल सकती।

8) अन्त समय में प्रकृति के पांचों ही तत्व अच्छी तरह से हिलाने की कोशिश करेंगे, परन्तु विदेही अवस्था की अभ्यासी आत्मा बिल्कुल ऐसा अचल-अडोल पास विद आनर होगी जो सब बातें पास हो जायेंगी लेकिन वह ब्रह्मा बाप के समान पास विद आनर का सबूत देगी।

9) कोई भी सेवा के प्लैन्स बनाते हो, भले बनाओ, भले सोचो, लेकिन क्या होगा!... उस आश्चर्यवत होकर नहीं। विदेही, साक्षी बन सोचो। सोचा, प्लैन बनाया और सेकण्ड में प्लेन स्थिति बनाते चलो। अभी आवश्यकता स्थिति की है। यह विदेही स्थिति परिस्थिति को बहुत सहज पार कर लेगी। जैसे बादल आये, चले गये। विदेही, अचल-अडोल हो खेल देख रहे हैं।

10) जैसे ब्रह्मा बाप अव्यक्त बन विदेही स्थिति द्वारा कर्मातीत बने, तो अव्यक्त ब्रह्मा की विशेष पालना के पात्र हो इसलिए अव्यक्त पालना का रेसपान्ड विदेही बनकर दो। सेवा और स्थिति का बैलेन्स रखो।

11) सारे दिन में बीच-बीच में एक सेकण्ड भी मिले, तो बार-बार यह विदेही बनने का अभ्यास करते रहो। दो चार सेकण्ड भी निकालो इससे बहुत मदद मिलेगी। नहीं तो सारा दिन बुद्धि चलती रहती है, तो विदेही बनने में टाइम लग जाता है और अभ्यास होगा तो जब चाहे उसी समय विदेही हो जायेंगे क्योंकि अन्त में सब अचानक होना है। तो अचानक के पेपर में यह विदेही पन का अभ्यास बहुत आवश्यक है।

12) जितना जो बिजी है, उतना ही उसको बीच-बीच में यह अभ्यास करना जरूरी है, फिर सेवा में जो कभी-कभी थकावट होती है, कभी कुछ न कुछ आपस में हलचल हो जाती है, वह नहीं होगा। एक सेकण्ड में न्यारे होने का अभ्यास होगा तो कोई भी बात हुई एक सेकण्ड में अपने अभ्यास से इन बातों से दूर हो जायेंगे। सोचा और हुआ। युद्ध नहीं करनी पड़ेगी।

13) अगर विदेही बनने का सेकण्ड में अभ्यास नहीं होगा तो लास्ट घड़ी भी युद्ध में ही जायेगी और जिस बात में कमजोर

होगे, चाहे स्वभाव में, चाहे सम्बन्ध में आने में, चाहे संकल्प शक्ति में, वृत्ति में, वायुमण्डल के प्रभाव में, जिस बात में कमजोर होंगे, उसी रूप में जानबूझकर भी माया लास्ट पेपर लेगी इसीलिए विदेही बनने का अभ्यास बहुत जरूरी है। कोई भी रूप की माया आये, समझ तो है ही। एक सेकण्ड में विदेही बन जायेंगे तो माया का प्रभाव नहीं पड़ेगा। जैसे कोई मरा हुआ व्यक्ति हो, उसके ऊपर कोई प्रभाव नहीं पड़ता ना।

14) विदेही माना देह से न्यारा। स्वभाव, संस्कार, कमजोरियां सब देह के साथ हैं और देह से न्यारा हो गया तो सबसे न्यारा हो गया, इसलिए यह ड्रिल बहुत सहयोग देगी, इसमें कन्ट्रोलिंग पावर चाहिए।

15) चारों ओर हलचल है, व्यक्तियों की, प्रकृति की हलचल बढ़नी ही है, ऐसे समय पर सेफ्टी का साधन है सेकण्ड में अपने को विदेही, अशरीरी वा आत्म-अभिमानि बना लेना। तो बीच-बीच में ट्रायल करो एक सेकण्ड में मन-बुद्धि को जहाँ चाहे वहाँ स्थित कर सकते हैं! इसको ही साधना कहा जाता है।

16) विदेही बनने की विधि है - बिन्दी बनना। अशरीरी बनते हो, कर्मातीत बनते हो, सबकी विधि बिन्दी है इसलिए बापदादा कहते हैं अमृतवेले बापदादा से मिलन मनाते, रूहरिहान करते जब कार्य में आते हो तो पहले तीन बिन्दियों का तिलक मस्तक पर लगाओ और चेक करो - किसी भी कारण से यह स्मृति का तिलक मिटे नहीं। अविनाशी, अमिट तिलक रहे।

शिवबाबा याद है ?

5-2-12

ओम् शान्ति

मधुबन

“लगन की अग्न तेज और कन्टीन्यु हो तब योग ज्वाला स्वरूप होगा”

(दादी जानकी)

ओम् शान्ति का अर्थ सब भाषा वाले सेकण्ड में समझ जाते हैं कि आई एम पीस। जो शान्ति कितना भी ढूँढ़ने से कहाँ से भी नहीं मिली और ही अशान्ति बढ़ती गयी। जिसके पीछे धन भी गंवाया, तन से भटके, मन तो वही रहा। अब बाप कहते - बच्चे, तुम मेरे हो ना तो जब साइलेंस में बैठते हो, साइलेंस में बैठने की भी बाबा एक गिफ्ट देता है। बच्चे, रहो साइलेंस में भले कार्य-व्यवहार करो पर चिंता वा चिंतन कोई नहीं करो। न चिंता, न चिंतन तो साइलेंस में बैठेंगे। व्यर्थ संकल्प से मुक्त रहेंगे। साइलेंस में भले आँखें खुली हैं लेकिन अन्दर से संकल्प शान्त हैं तो बहुत अच्छा लगता है। साइलेंस में रहो तो शरीर में होते भी बहुत लाइट अपने को फील करेंगे। लाइट रोशनी भी है, जिससे अन्धकार चला गया है। पहले आत्मा शरीर में है पर अन्धकार में है, बाहरमुखी है। माया के वश थे, तो थकावट बहुत हो गयी थी क्योंकि अपनी आत्म शक्ति थी ही नहीं।

अभी तीसरा नेत्र भी मिला, अपने को और बाप को देखने के लिये नेत्र मिला तो अभी अन्तर्मुखी बन गये। अन्तर्मुखी सदा सुखी, अब इसका इंगलिश में क्या अनुवाद करेंगे। जब अन्तर्मुखी सदा सुखी तो बस, नो प्रॉब्लम। अगर बाह्यमुखता है तो बस, इसकी उसकी अनेकानेक बातें सोचने वाले, बातें

करने वाले सामने आते रहेंगे। अभी तो मेरे को अन्दर से संकल्प आता है कि ऐसी अनावश्यक बातें सोचने और व्यर्थ बातें करने वाली आत्मा मेरे सामने ही न आवे तो अच्छा है। निराकार परमात्मा को आरगन्स नहीं हैं इनके आरगन्स द्वारा हमको प्रैक्टिकली अनुभव करा रहा है। अन्दर मेरी फीलिंग में सच्चाई और प्रेम हो इसके सिवाए और कुछ न हो। वैसे बाबा हमें समझाते हैं मैं मनुष्य से देवता बनाने आया हूँ, तो साधारण मनुष्य की फीलिंग कैसी होती है और बाबा के बच्चे हम देवता बनने वालों की फीलिंग कैसी होती है। फर्क है ना। बाप अभी शिक्षायें दे दे करके अभी देवताओं सम सर्वगुण सम्पन्न बना रहा है। बाबा एक एक बच्चे को कहता है, बच्चों में एक भी कोई अवगुण न हो, कोई बात न पकड़े, न कोई बात की खींच हो। छोड़ो तो छूटेंगे, त्याग, त्याग, त्याग। तो त्याग करना नहीं पड़ता है लेकिन लगता है कि यह तो भाग्य है। अगर रीयली किसी को रियलाइजेशन हो जाए तो त्याग करना उसके लिये इज़ी हो जायेगा। रियलाइजेशन से भाग्य खुल गया तो भगवान का साथ मिल गया।

हरेक बाबा का बच्चा त्याग से भाग्य कैसे बनाता है वो समझे, तो जो आर्टिफिशियल है वो चला जायेगा और जो रीयल है वो मेरे पास आ जायेगा इसलिये बाबा कहते हैं बच्चे

बाप को याद करो यानि बाप को सामने रखो तो जो तुम्हारे में इगो और अटैचमेंट की कमी कमजोरी है उसकी पूरी अण्डरस्टैंडिंग से छूट सकेंगे। इसके लिए लगन की अग्नि तेज हो, अच्छी लगन हो, कंटीनिव हो तब कहेंगे ज्वाला स्वरूप योग। योग की क्वालिटी कब अच्छी हो, कब अच्छी न हो तो भी त्याग वृत्ति नहीं होगी। शिव है निराकार, उसका इशारा है ब्रह्मा बाबा के द्वारा तुम भी ऐसे निराकार बन जाओ। आत्मा, जैसे मुझे शरीर नहीं है तो शरीर में होते हुए भी शरीर से न्यारा हो जाओ। इस शरीर में देखो तो ब्रह्माबाबा को देखो, शरीर में होते हुए त्याग वृत्ति फिर अनासक्त वृत्ति फिर उपराम वृत्ति हो तब त्याग वृत्ति होगी, ऐसी स्टडी करनी है। जितनी स्टडी करते हैं उतना क्लीयर समझ में आता है। तो 75 वर्ष में मुझे आज भी स्टडी का बहुत शौक है। अगर स्टडी न करूँ तो यहाँ बैठूँ ही नहीं। ब्रह्मा बाबा के 60 वर्ष की आयु में शिवबाबा आया। 93 एज में ब्रह्मा बाबा इस शरीर से अव्यक्त हुआ। पर उसमें जो बाबा को देखा, त्याग वृत्ति तपस्वी मूर्त सेवा करके हमको अन्दर से ऐसा देता आ रहा है, अभी अव्यक्त रूप से भी दे रहा है। आप सबको भी अव्यक्त रूप से मिला है।

जैसे बाबा के चित्र में चारों तरफ लाइट ही लाइट है, ऐसे हमारे चारों तरफ भी लाइट ही लाइट अनुभव हो। अभी आत्मायें, परमात्मा से लाइट ले रही हैं तो वो नई एनर्जी ऑटोमेटिक काम कर रही है, यह भी वन्डरफुल है कि इससे निर्बल आत्माओं को बल मिलता है, यह है सकाश देना। ऐसे लगेगा कि जो हमारी निंदा करता वह हमारा मित्र है क्योंकि निंदा करने वाला हम जो हैं वो कह देता है, वह ऐसे ही हमें खुश करने के लिये या हमें आवेश में लाने के लिये नहीं कहता है क्योंकि उसमें बल नहीं होता है। तो वो मेरा मित्र है जिसने करेक्शन करने का मौका दिया। बाबा ने इतनी समझ दी है जो हमारी वृत्ति दृष्टि में है कि सभी आत्मायें मेरे बाप के बच्चे हैं, तो भावनायें भी मित्रता वाली आपेही इमर्ज होंगी। हम सब एक घर के रहने वाले हैं। जैसे परमधाम में हम सब इकट्ठे थे, वैसे अब वापस फिर से इस संगठन के रूप में यहाँ बाबा के सामने इकट्ठे हो रहे हैं। इस तरह से याद में बैठकर बाबा से सर्व सम्बन्ध का सुख ले लो। वो जाति, रंग, भेद से न्यारा है क्योंकि आत्मा है ना।

हर एक का अपना अपना पार्ट है, जो हर सेकण्ड में चेंज होता जाता है क्योंकि ड्रामा में सेम सीन सदैव होती नहीं है। तो यह न सोचने से, इस तरह से न चलने से किसी न किसी के भाव स्वभाव का हिसाब-किताब बन जाता है। भल

कलियुगी कर्मबन्धन टूट गये, वहाँ से फ्री हो गये पर सच्ची दिल से पुरुषार्थ में पहले स्वच्छता... फिर सच्चाई... फिर नम्रता... और मधुरता हो तो सहज योग है। मेहनत नहीं है, नेचुरल है। निश्चय बुद्धि से संस्कारों को परिवर्तन करने में बलवान बनते जाते हैं।

त्याग वृत्ति, तपस्वी मूर्त से सेवा अपने आप नेचुरल है। समय प्रति समय बाबा जो भी शिक्षायें देते हैं, वो कोई याद रख उस अनुसार ध्यान रखके चले ना तो वो बहुत काम आती हैं। ऐसे पुरुषार्थी को प्रकृति भी साथ देती है। ऐसों की हाज़री में भी अच्छा है, वही पालना है। उड़ते उड़ाते रहना है। लेकिन इसके लिये सिर्फ क्या करूँ, कैसे करूँ.. ऐसे नहीं कहके जो करना है सो अब कर लें, बाबा करा रहा है। ऐसे अच्छे मन्त्र वा यन्त्र मन में पक्के हो तो साक्षी हो करके देखने का बहुत मजा आयेगा। पास्ट का कोई कर्म है या अभी का कोई कर्म है, पास्ट जन्म का तो पास्ट हो गया, अभी अच्छा कर्म करने का भाग्य मिला है। पास्ट जरा भी मिक्स न हो। कल का भी जो पार्ट बीता वो भी आज मिक्स न हो। अब नाऊ इट इज़ टाइम। एच ओ डब्ल्यू (HOW) कभी नहीं बोलना, एन ओ डब्ल्यू (NOW) बोलना, यह कितने अच्छे शब्द हैं। अब बोलने वाले बाबा के सामने प्रेजेन्ट हो जाते हैं। कभी संकल्प नहीं आता है कि यह कैसे होगा या फलाना ऐसा है, न बुद्धि में है, न मन में हैं, न चित में है, सब अच्छे हैं। भगवान जानें यह जानें ऐसी स्थिति अब हरेक को बनानी है। जब वो सब कर रहा है, करा रहा है तो मैं काहे को बैठके और बातें करूँ, नहीं करना है। अपने को तो ऐसे कर्म करना है जो यादगार बन जायें। जैसे बाबा को किसी-किसी का नाम याद रहता है, किसी-किसी का नहीं तो यह क्या है? श्रेष्ठ प्रालब्ध को अपने हाथों से बनाने वाली बातें सदा याद रहें। कर्म बड़े बलवान हैं, बाबा सर्वशक्तिवान है कर्म बलवान कैसे बनेंगे? जब मेरे अन्दर उमंग उत्साह होगा, जो भी कर्म वो करा रहा है, हम कर रहे हैं, इस स्मृति से कर्म करने से उसमें एनर्जी पैदा हो जाती है।

फिर विश्वास असम्भव को भी सम्भव कर रहा है। बच्चों को निमित्त बनाके सारे विश्व को हाथों में ले लिया। तो हम कौन हैं? बाप है कल्याणकारी, बच्चे हैं विश्व-कल्याणकारी। जरा भी कोई क्यों, क्या में गये तो बाबा के वो बच्चे कोई काम के न रहे। तो दिन रात मैं बाबा के काम की बनूँ। जो बाबा कहे वो दिल को लग जाये, तो दिलाराम के साथ में रहने में मजा आता है। दिल में भी दिलाराम के साथ हैं तो वही सब कारोबार ठीक से चलाता है। हार्ट में बाबा को देखो, हेड में हल्के हो टेन्शन फ्री, ऐसे राइट हैण्ड्स बनो। जो पास्ट को लेफ्ट करेंगे वही राइट हैण्ड बन सकते हैं।

विदेशी भाई-बहनों के प्रश्न - दादी जानकी जी के उत्तर

प्रश्न:- रावण को जलाना और मारना इसमें क्या फर्क है? एक है पुराने कर्मों के हिसाब-किताब, फिर हैं पुराने संस्कार, अभी जो माया के तूफान आते हैं, फिर है कि हमारे सामने विघ्न भी आते हैं, फिर है कि बाबा की तरफ से टेस्ट भी आते हैं, फिर ग्रहचारी होती है तो इन सबके बीच कभी ऐसे लगता है कि हम पीस जाते हैं, फँस जाते हैं क्योंकि इतना सब कुछ झेलना पड़ता है, सामना करना पड़ता है तो ब्राह्मण लाइफ का मजा नहीं आता है। आपने एक बारी कहा था कि विघ्न, ग्रहचारी से कड़ा है तो यह कैसे मालूम पड़े कि हमारे ऊपर कोई ग्रहचारी है? दूसरा ग्रहचारी को हटाये कैसे? दादी आप बाबा के हर महावाक्यों के शब्दों को गहराई से स्पष्ट करके बताते हैं तो आज यह बताइये कि विदेही अवस्था और अशरीरी अवस्था को आप कैसे अलग-अलग देखते हैं या एक देखते हैं?

उत्तर:- पास्ट का हिसाब-किताब है, प्रेजेन्ट माया के तूफान हैं, कोई ग्रहचारी बैठी है जो काम करते सफल नहीं होता है। फिर तूफान तो ऐसे आते हैं जो पता ही नहीं चलता है कि कहाँ से कहाँ पहुँचा देते हैं। और साथ-साथ विघ्न जब आते हैं तो एक के पीछे दूसरा विघ्न आयेगा, परन्तु इन सबको समझ करके उनको आने नहीं देना, दूर से हटा देना। अगर नहीं हटाते तो ग्रहचारी बैठ जाती है फिर अलबेले होते हैं, खबरदार होशियार नहीं होते हैं तो विघ्न आते हैं। पुरुषार्थ में पुरुषोत्तम संगमयुग सदा स्मृति में रहे तो उपरोक्त सब बातें आपेही खत्म हो जायेगी। हिसाब-किताब, तूफान, ग्रहचारी, विघ्न यह सब आते हैं लेकिन इन सबको आने ही न दो। आये तो जरूर हैं क्योंकि इनके आने बिगर आगे कैसे जायेंगे! परन्तु अटेन्शन माना दिन-रात, सुबह-शाम,, गुडमार्निंग करते या गुडनाइट करते अपने को देखना है मुझे बाबा याद है? याद माना याद, उसमें और कोई याद न आवे, कुछ याद न आवे - यह है पुरुषार्थ। सदैव प्राप्तियों से सम्पन्न होने में व्यस्त रहने कारण व्यर्थ पस्त (खत्म) हो जाता है, उसे टाइम ही नहीं मिलेगा। अभी हरेक कहाँ-न-कहाँ व्यस्त जरूर रहता है, व्यस्त होने से लिप्त हो जाते हैं। फिर वहाँ से

निकलना, फ्री होके बाबा को याद करना मेहनत लगती है। किसी के स्वभाव से, किसी के संस्कारों के प्रभाव या दबाव में आ जाते हैं या सूक्ष्म घृणा में आ जाते हैं। किसी के लिये भी घृणा मेरे को आयी तो उस घड़ी मैं कौन हूँ? सामने बाबा को देखने के बिगर बाप समान नहीं दिखाई पड़ेंगे। भले कोई संशय में आके छोड़के चले जायेंगे, कुछ भी करेंगे फिर भी यहाँ ही शरण तो देना ही पड़ता है। फिर भी बाबा कहते बाबा समान बनना हो तो क्षमा करना सीखो। हर हालत में हर बात में बाबा क्या करता है? कैसे करता है? वैसे करो। जो भी सामने आते हैं, उसे अन्दर से आत्मीयता से दृष्टि दो और यह फील हो उसे भी हमें भी कि मैं भी अशरीरी वो भी अशरीरी... ऐसे बीच-बीच में रिहर्सल करना जरूरी है। रिंचक भी देह का भान न हो, देह-अभिमान भी नहीं जब तक ऐसा अन्दर से अभ्यास नहीं किया है तब तक यह सब बातें आती हैं। पर जो बात आयी भी सेकण्ड में महसूस करके उसी घड़ी वो बात वहाँ, मैं यहाँ, बस अन्दर नज़दीक आने नहीं दो क्योंकि जहाँ बात है वहाँ बाप नहीं, जहाँ बाप है वहाँ बात नहीं, न पर्सनली, न सेवा की ही कोई बात है और न ही कोई सम्बन्ध-सम्पर्क की बात है, यह समझने और अनुभव करने की बात है।

बाबा के साथ योग माना कनेक्शन, तो याद में कोई बात याद न आवे। यह आपको हमको, सबको जब तक कोई दिल में बात है, बाप याद आयेगा ही नहीं। ऐसा कौन बहादुर बैठा है जो बाप को भी याद करता रहे और बातों को भी याद करता रहे, और कहता रहे मैं देही-अभिमानि स्थिति में रहता हूँ लेकिन मैं तो ऐसा नहीं कर सकती हूँ। या रहेगी सोल कॉन्सेस या रहेगी बॉडी कॉन्सेस। कॉन्सेस तो एक ही है, भले कहेंगे मैं बॉडी तो नहीं समझती हूँ, पर बॉडी कॉन्सेस तो है ना। कोई स्थिति ऐसी आती है अनकॉन्सेस हो जाते हैं। न सोल न बॉडी, स्थिति ऐसी है मुरझाई हुई, मूँझी हुई, घबराई हुई इसलिए इसे ऐसा जला दो इसकी अस्थियाँ भी न रहें। अस्थियों से भी भूत निकल आयेंगे, उसे गंगा में डाल आते हैं इसलिए भारत में जो रिवाज है जब कोई शरीर छोड़ते हैं तो

वो डेड बॉडी रखने से डरते हैं इसलिए उस शरीर को नहीं रखते हैं। तुरन्त उसे जलाते और कब्रदाखिल करते हैं इसलिए जीते जी मरे हुए के बराबर बनो तब कहेंगे देही-अभिमानि स्थिति। जैसे बाबा करता है, वैसे करने में सुख मिलता इलाही है। जैसे बाबा करता है, सोता है तो कैसे सोता है, उठता है तो कैसे, चलता है तो कैसे, देखता है तो कैसे देखता है, इस फल-स्वरूप में सारी विश्व से जो आप सब आत्मायें यहाँ बाबा के पास बैठे हो इस दृष्टि से बैठे हो।

अन्दर और कोई बात याद नहीं है यही स्मृति हो बाबा, समय, स्वयं और सेवा और कुछ नहीं है। सेवा क्या है? स्वयं को बाबा के साथ देख रहे हैं, हम बाबा को देख रहे हैं, इसी में समय सफल होता जाये तो जो संग में आयेगा उसका समय भी सफल हो जायेगा। नई दुनिया बनाने वाले बाबा के पास बैठे हैं, बस यहाँ से कहीं नहीं जायेंगे। जैसा है बाप, वैसे बच्चे भी अच्छे हैं, उन्हीं में भी सबसे अच्छा बच्चा बन जाऊँ। तो जिसको बाबा को खुश करना हो ना, तो जो बाबा कहे वो फौरन कर लो। सदा आलराऊण्डर मददगार बनने में एवररेडी रहना, यह है सदा देही-अभिमानि स्थिति में रहना। देह-अभिमान में यह क्यों, यह क्या, यह ठीक नहीं है, यह... देह-अभिमान है। ऐसा आवाज भी जो है, विचार भी जो है ना वो शक्ल यानि बॉडी लैंग्वेज भी बताता कि वेस्ट ऑफ टाइम। तो मैं कौन हूँ? मेरा कौन है? यह सब बाबा के बच्चे हैं ना, सेवा भाग्य है, कर्मयोगी हैं, राजयोगी हैं। तो कर्म में, विचारों में योगी रहो, कर्मणा में निमित्त मात्र हैं। योग से कर्म बड़ा अच्छा हो रहा है। भले मैं न कर सकी, यह भी अच्छा कर रहे हैं।

हमारा योग ऐसा हो जहाँ बाबा याद करे हम वहाँ पहुँच जाऊँ, खींच होवे और हम जहाँ बाबा को याद करें वहाँ तुम तो यहीं कहीं यह अनुभव हो, इतनी बुद्धि की लाइन क्लीयर हो। इसके लिये टचिंग पॉवर और कैचिंग पॉवर एक्क्यूरेट हो। अगर हमारे पुरुषार्थ में, सेवा में सच्ची भावना है हिम्मत बच्चे मददे बाप। हिम्मत से कनेक्शन है तो बहुत मदद है, उसी आधार से यह खेल चल रहा है। दूसरा सच्ची दिल से साहेब राजी, वो मेरा कोई भी पुराना हिसाब-किताब खलास कर देता है। आजकल पुराना चुकतू ही नहीं हुआ है, दूसरा बना रहे हैं। कईयों को यह ध्यान ही नहीं है कि सब हिसाब चुकतू हो जायें, मैं फ्री हो करके उड़न खटोले में ऊड़ूँ। अभी तक

यह लगन शुरू ही नहीं हुई है। तो कोई की तबियत में, किसके मोह में, किसके लोभ में, किसके प्रभाव या दबाव में हिसाब-किताब जोड़ते रहते हैं फिर वही सामने आता रहेगा तो बोझ वाले को मैं फ्री हूँ, हल्का हूँ.. यह अनुभव नसीब नहीं होगा इसलिए शिव और स्व-सेवा के अलावा और कोई जानकारी बुद्धि में नहीं रखनी है। नहीं तो वही बार-बार बुद्धि में आता रहेगा। और जब स्व के साथ बाबा को देखेंगे फिर तो बाबा हमें अपना वन्दरफुल खिलौना बनाके सेवायें लेता रहता है। बाबा भी हमारा खिलौना है, इसे कहाँ भी ले जाती हूँ, ऐसे तो मैं कहीं जा नहीं सकती वो ले जाता है, मैं उसको साथ ले जाती हूँ। तो कौन किसको ले जाते हैं? बाबा जो है वो जो कहता है वो करके दिखाता है। जो कहा है वो करके दिखाया है। निर्भय, निर्वैर, सूक्ष्म किसी के साथ भी वैर भाव जरा भी है तो उसमें उसको भय जरूर होगा। निश्चय का बल नहीं होगा। मैंने किया नहीं है, पर सच्ची दिल से सेवा का फल बहुत अच्छा निकलता है। फिर माली फल खुद नहीं खाता, फल औरों को मिले, निष्काम सेवा करता है। फल इच्छा से वा मान इच्छा से सेवा करना यह देह-अभिमान है। सेवा की गिनती करना देह-अभिमान है। झाड़ से फल निकलता ही रहता है इसलिए कितना गिनती करते रहेंगे। मालिक की मेहरबानी है जिससे फल अच्छा मिल रहा है।

कोई कोई होते हैं हद में लेकिन अपने को इतना अच्छा समझते हैं कि मैं बहुत अच्छा.. मेरी एरिया है ना, मेरा स्टूडेंट है ना, वो देही-अभिमानि रहते होंगे क्या? भले कितना भी कहे मेरा योग अच्छा है, भले कितना भी कोई सेवा करे, पर यह अपने को खुश करने की बातें हैं। अति सूक्ष्म सार यह है - सच्चाई पर भगवान भी हमारे ऊपर बलिहार जाता है। हम उसकी सच्चाई को देख उस पर बलिहार गये हैं। वो भी हमारी सच्चाई को कंटीनिव देखता है क्योंकि कई हैं जो पुरुषार्थ करते करते बीच में खराब संग मिला या फालतू बात सुनी तो संशय बुद्धि हो जाते हैं। तो निश्चयबुद्धि वैजयन्ती, भावना का भाड़ा कंटीनिव सारी लाइफ में चलता रहे, कभी क्यों क्या में न आवें, तो कहेंगे भाग्यवान तो क्या, सौभाग्यवान तो क्या हजार गुणा भाग्यवान तो क्या, पदमापदम भाग्यशाली हैं। ऐसे हैं हम बाबा के बच्चे। जहाँ कदम वहाँ कमाई ही कमाई। अच्छा। ओम् शान्ति। 1

मधुबन से ऐसी शक्ति लेकर जाओ जो आपका खुश किस्मत चेहरा सेवा करें

- गुल्जार दादी

आप सबको देख करके आपके भाग्य की विशेषता देख खुशी हो रही है क्योंकि जो विशेष बर्थ डे (शिवजयन्ती) है उस पर आप सन्मुख पहुँच गये हो। यह तो आपका भाग्य है जो इस समय पर आपका टर्न हुआ है। तो आपके भाग्य को मुबारक हो, मुबारक हो।

आज हम सब मधुबन में इकट्ठे हुए हैं। मधुबन है ही मधुरता दिलाने वाला। आज के दिन की आपको क्या क्या बधाइयाँ दें लेकिन इतना जरूर कहेंगे कि यह ग्रुप बहुत लक्की है। तो कोई भी आपमें अगर कमी हो उसे यहाँ ही छोड़के जाना। मधुबन में आना माना ही मधुरता स्वरूप बनकर जाना। अगर भगवान और भाग्य सदा याद रहेगा तो हमारी अवस्था बाप समान रहेगी। इस प्राप्त किये हुए अचानक के भाग्य को आप कभी भी भूलना नहीं क्योंकि भगवान ने अपने समान बनने का भाग्य दिया है, वो भी कितना सहज! सिर्फ मेरा बाबा, बस। और सब मेरा मेरा खत्म करके एक “मेरा बाबा” क्योंकि “मेरा-मेरा” ही नीचे ले आता है लेकिन “मेरा बाबा” कहने से ऊँच चले जाते हैं। तो आप सब आये हो हमें भी देख करके खुशी हो रही है और आप भी चाहे यहाँ, चाहे कहाँ भी हो खुश रहेंगे क्योंकि बाबा अभी यही चाहता है कि मेरे हरेक बच्चे की सूरत में शक्ल में जो भाग्य प्राप्त किया है वो दिखाई देवे। हम साधारण नहीं लगे लेकिन हमारी शक्ल बोले कि हमें क्या प्राप्त हुआ है। मुख से बोलने की भी जरूरत नहीं है, शक्ल हमारी बोले। तो यहाँ से इतने खुशी के भण्डार भरके जाना जो कभी भी यह भण्डार खत्म नहीं हो।

आपको देख करके सभी कहें कि यह खुश-किस्मत वाली

आत्मायें कहाँ से आई हैं? आपकी शक्ल सेवा करे, हमारा चेहरा खिला हुआ गुलाब के फूल की तरह रूहानी गुलाब होना चाहिए। तो बाबा यही चाहता है कि जो मधुबन अपने घर में आये हैं वे अपना चेहरा ऐसा बदलके जायें जो आपको कोई भी देखे तो वो भी बहुत रिफ्रेश हो जाये क्योंकि खुशी आजकल है ही नहीं, चाहते हैं लेकिन खुशी नहीं आती। बाबा का अभी इशारा यही है कि अभी यहाँ से ऐसे सर्विसएबुल हो करके (बनके) जाना। बाबा की याद में, बाबा शब्द कहते ही शक्ल में बाबा का वो प्यार और शक्ति आ गयी। बाबा समान मुस्कराता हुआ चेहरा अपना बनाके जायेंगे। इसकी सहज विधि अपने दिल में बाबा को याद रखो। सभी को बापदादा से प्यार है, सबसे प्यारी चीज़ को दिल में रखा जाता है। जिसके दिल में सदा बाबा रहता है वो कभी अकेला नहीं हो सकता है क्योंकि बाबा कहता है जो मेरे को अपना बनाके मुझे याद करता है, उसको मैं सब कुछ दे देता हूँ। ऐसे अनुभव करके जाना, ऐसे ही बस आये क्लासेज़ सुनी, बहुत अच्छा लगा लेकिन आप में उससे परिवर्तन क्या आया? तो कल बाबा आयेगा, दृष्टि देगा और हरेक के चेहरे को देखेगा, तो हरेक के चेहरे में क्या देखे? सबके मस्तक में आत्मा चमक रही है वाह! चारों ओर आत्मा की रोशनी... ऐसा हो तो सकता है ना! धारणा नहीं करते तो आत्मा चमकती नहीं। तो कल की सभा में बाबा फर्क देखे, जहाँ भी देखे वहाँ आत्मा की चमक ही देखे तो बाबा कहेगा वाह बच्चे वाह! वन्दरफुल ग्रुप है। तो कल बाबा आके क्या देखेगा? चमकती हुई आत्मायें। अच्छा। ओम् शान्ति।

दादी प्रकाशमणि जी के अमृत वचन

साइलेन्स की शक्ति से विकर्म विनाश

1) बाबा कहते बच्चे स्वयं में साइलेन्स की शक्ति जमा करो। साइलेन्स की शक्ति इतनी जमा हो जो स्वयं के विकर्म भी विनाश हो और दूसरों को भी वह शक्ति उपराम कर ऊपर ले जाए। साइलेन्स की शक्ति जमा तब होगी जब कोई भी व्यर्थ संकल्प न हो। तो चेक करो कि अभी तक हमारे में व्यर्थ कहाँ कहाँ है? कमी किस चीज़ की है या कौनसा संस्कार है, जो

मुझे पुरुषार्थ में आगे बढ़ने में रूकावट करता है? सच्ची दिल से बाबा को सामने रख हरेक अपना चार्ट देखो कि मेरे पुरुषार्थ की गति किस तरह है? क्या मेरे पुरुषार्थ में संस्कारों का विघ्न है? क्या कोई ऐसा भी पुरुषार्थ है जो मुझे रियलाइज न हो, परन्तु दूसरा मुझे उसी रूप में देखते या मेरी रियलाइजेशन कम है जो यह रियलाइज करते पर मैं नहीं करती, तो यह क्या

है? या मेरा चार्ट इतना अच्छा है जो थैक्स बाबा मैं बिल्कुल निर्विघ्न हूँ, यह कह सकूँ या कोई सूक्ष्म मेरे में विघ्न है?

2) कोई इच्छा है, कोई सूक्ष्म देह-अभिमान है, कोई सूक्ष्म कहाँ वृत्ति है या नहीं? या इन सब बातों से परे बाबा, सेवा और मैं उपराम, बस। जिसको बाबा कहते त्यागी रहो, तपस्वी बनो। कहा जाता तपस्वियों की तपस्या के बीच में हमेशा असुर विघ्न डालते। तो हम तपस्वी राजयोगी हैं, कोई संस्कारों रूपी माया मेरी तपस्या में विघ्न रूप तो नहीं है? है तो उसे किसी भी तरह पुरुषार्थ करके खत्म करो। बाबा से प्रतिज्ञा करो कि अब हम इन संस्कारों से भी मुक्त हो जायेंगे। हम बाबा से वरदानी मूर्त बन, वरदानों से अपने को भरपूर करें और अपने योग की स्थिति से खुद भी निर्विघ्न बनें और औरों को भी निर्विघ्न बनायें लेकिन इसके लिए चाहिए निरन्तर पुरुषार्थ, न कि एक दिन का पुरुषार्थ क्योंकि बाबा हमें रोज़ मुरली में मामेकम्, मामेकम् का मन्त्र पढ़ाते हैं।

3) आप हरेक अपने को समझते हो कि मैं स्वयं की, यज्ञ की, ईश्वरीय परिवार की, विश्व की कल्याणकारी आत्मा हूँ? कितना स्वयं का कल्याण किया है? कितना यज्ञ में सेवा से कल्याणकारी हूँ? कितना हम विश्व कल्याणकारी हूँ? दूसरा यह चेक करो कि बाबा रोज़ जो श्रीमत देता है, मेरा बराबर मन, वचन, कर्म, संकल्प जो भी है, मैं कदम कदम श्रीमत पर चलती या चलता हूँ? या श्रीमत के खिलाफ मनमत पर तो नहीं चलता?

मनमत पर चलना यह भी एक यज्ञ का विघ्न रूप है। तो हमें किसी भी प्रकार से विघ्न रूप नहीं बनना है। निर्विघ्न रह निर्विघ्न स्थिति, सेवा और यज्ञ को निर्विघ्न बनाना है। साथ-साथ यह भी चेक करो कि मेरे से ऐसी कोई गलती तो नहीं होती जो वह गलती मेरे पुरुषार्थ पर पानी डाल दे अथवा ऐसी कोई गलती तो नहीं होती जो फॉलो फादर के बदले बदनामी वाली बन जावे। हम बाबा के कदम-कदम को फॉलो कहाँ तक करते हैं? तो एक तो सभी यह अटेन्शन फिर फिर दो - बाप समान बनने के लिए अपने आपसे या संगठन बनाके रूहरिहान करो, पुरुषार्थ करो, अपना चार्ट ठीक करो और सारे यज्ञ का वायुमण्डल, वातावरण, शान्तिमय, आनन्दमय, सुखमय, शक्तिमय बनाओ। इसमें ऐसी रूहानियत लाओ, यह है बाबा की वर्तमान समय की प्रेरणा।

4) दूसरों को दोषी मत बनाओ, दूसरों का दोष नहीं देखो। आपस में मतभेद नहीं करो, स्नेह से रहो। किसी से नफरत नहीं करो। हरेक को दुआओं की, शुभ भावना शुभ कामना की दृष्टि से देखो। बाबा से, सारे परिवार से हमें दुआयें, शुभ भावना शुभ कामनायें लेते आगे बढ़ते रहना है। अब समय है अपनी योग की स्थिति को आगे बढ़ाने का, यही बाबा की आज्ञा है। इसके लिए न आप ऐसी कोई बात सुनो, न सुनाओ। बाबा को कहो बाबा हम डबल ओ.के. हैं, खुशी से अहा! बाबा कहो। अच्छा - ओम् शान्ति।

मेडिकल विंग कार्यक्रम 2013

पुश खबरी – माउण्टआबू, ज्ञान सरोवर में 2013 सितम्बर 15 से 21 तक Internatioal Dialouge-cum-Retreat का आयोजन किया गया है। जिसमें Healthcare Profession से spirituality में रुचि रखने वाले अथवा जिन्होंने spirituality में कुछ कार्य किया है/कर रहे है, भाई-बहनें भाग ले सकते हैं। जिनका बायोडाटा भेजने पर उनके नाम से निमंत्रण पत्र एवं फोल्डर मधुबन से भेजा जायेगा।

दूसरी पुश खबरी – आबू रोड, शान्तिवन में डॉक्टर्स के लिए 2013 सितम्बर 13 से 17 तक Mind-Body Medicine कॉन्फ्रेंस का आयोजन किया गया है जिसमें क्वालिफाइड सभी डॉक्टर्स (एलोपैथी-होमियोपैथी तथा आयुर्वेद) भाग ले सकते हैं।

तीसरी पुश खबरी – 2013 सितम्बर 14 से 17 तक शान्तिवन में और 19 से 22 तक ज्ञान सरोवर में **Nursing Professionals** के लिए कॉन्फ्रेंस का आयोजन किया गया है। जिसमें Nursing Directors/Principals/Dean, Nursing Consultants, Nurse Educators, Nurse Researchers, Nursing Superintendents, Matrons and Senior Nursing Sisters बहनें-भाई भाग ले सकते हैं।

निम्नलिखित वेबसाइट पर सभी उपरोक्त कॉन्फ्रेंस/डायलॉग के लिए ऑन लाइन रजिस्ट्रेशन कर सकते अथवा डिटेल् जानकारी पढ़ सकते हैं – www.mindbodymedicine.bkmedicalwing.org

कॉन्फ्रेंस की अधिक जानकारी के लिए ई-मेल: mindbodymedicineconference@gmail.com